अनमोल खजाना

(२५-२-२०१३)

खुशी मनाओ घर बैठे, मिल गये मुझे भगवान
पांच विकारों वश न दबाना, मिली खुशी की खान

ठीक हुआ आपरेशन जिनका, खुला तीसरा नेत्र
नहीं गिरेंगे ठोकर खाकर, माया के रणक्षेत्र

लक्की वो जो बना रहे, औरों को आप समान
अनलक्की खाते-पीते और, करते हैं आराम

दुःख नहीं देता परमपिता, सुखदाता नामीग्रामी
दुःखहर्ता, सुखकर्ता वो तो, सबसे बड़ी आसामी

सत्यनारायण की कथा है, दुनिया में मशहूर
सच्ची कथा सुनने से वंचित, ना रह जाना दूर

सेवा में तत्पर रहने से, मिट जाती सब मूंझ
जितना आप समान बनाते, पाते हैं पद ऊंच

जो औरों को दुःख देते हैं, वो अनलक्की स्टार
धर्म नहीं है ये ब्राह्मण का, नहीं है शिष्टाचार

नम्बर वन लक्ष्मीनारायण, सबसे लक्की सितारे
सतयुग के महाराजा सबको, लगते प्यारे-प्यारे

कृष्ण नहीं जाता है बाहर, छोड़ के अपना घर

नहीं किसी के वस्त्र चुराते, जमुना कण्ठे पर

नहीं धरा है रूप मैंने, कच्छ, मच्छ अवतार
ब्राह्मण रचने ब्रह्मा तन का, लेता मैं आधार

मातपिता और गुरू गुसांई, अब सबकी मत छोड़
मुख मोड़ो जनमत, परमत से, श्रीमत के संग जोड़

शंख ज्ञान का देते हैं शिव, निराकार भगवान
ज्ञान सुनाकर जन-जन का, करने को कल्याण

चक्र स्वदर्शनधारी बच्चे, चक्र फिराओ रोज
चक्र फिराते मिट जायेंगे, माया के सब बोझ

निराकार टीचर की मत में, सबकी मतें समाई
मातपिता सतगुरु वही है, वही हमारे भाई

बीती को बीती कर, गैलप करो तीव्र पुरुषार्थ
समय, श्वांस को सफल करो, सब विश्व की सेवार्थ

एक बाप के लव में खुद को, रखो सदा लवलीन
सेफ रहेंगे माया से, कब होंगे नहीं अधीन

पूर्वजपन की पोजीशन पर, सदा रहो नियुक्त
माया और प्रकृति के, बन्धन से होंगे मुक्त

–:ओमशान्ति:-